जिनम् पाठशाला
राग द्वेष तो कर्म है, वीतरागता धर्म है

धर्म पहेली

प्रतियोगिता के नियम और शर्तें

- आपकी स्क्रीन पर क्रमशः एक एक करके कुछ प्रथमानुयोग से पहेली नुमा प्रश्न आयेंगे | पहेली का भाव समझ कर आपको उत्तर बताना है|

- कम्प्यूटर द्वारा सही answer आने पर ही विजेता घोषित किया जाएगा |

- कम्प्यूटर द्वारा आया उत्तर ही मान्य होगा |

- जो व्यक्ति सही उत्तर देगा वह विजेता होगा।

1 एक फ़िल्म ऐसी चले, क्रमशः चौबीस बार।

दृश्य वही बदले नही, माँ से पूछ बताय।।

सोलह स्वप्न

2. तीन युद्ध विजयी हुए, प्यारे लाल सुनन्द।
तन पर बेलें चढ़ गयीं, उर आतम आनंद।।

बाहुबली जी

3. तीर्थंकर खुद बन गए , तीर्थंकर के पौत्र।।
पावापुर से मोक्ष पधारे, भोगे सुख बहोत ||

भगवान महावीर

4. हाथ कटोरा ले खड़ी, किन्तु बंधे है पाँव।
महावीर आगे बढ़े, अंखियन जल भर जाय।।

चंदनवाला

5. पर पुरुष न नजर उठाई, वनवास भोग कर आई।

दो रत्न सौंप पति को, बन आर्यिका नर भव सफल कराई।।

सीता

6.सात शतक मुनियों की रक्षा, रक्षा बंधन पर्व महान |

वामन का था वेष है धारा, बतलाओ तुम मेरा नाम।।

विष्णुकुमार मुनि

7. घड़ा रखा आंगन माहिं, भरा नाग विकराल।

सास बहू से यू कहे, बेटी हार निकाल।।

सती सोमा

8. मिथ्यातम को दूर भागावे, ज्ञान का सम्यक दीप जलावे।

सबकी माता कहलाती हूं, बतलाओ तुम मेरा नाम।।

जिनवाणी

9. काम भाव के वशीभूत हो, मुनिमुद्रा का छेद किया था।

एक कुम्हारन की लड़की से, शादी का संबंध किया था।।

पर श्रद्धा पक्की थी उनकी,चारित्र में ही दोष लगा था।

अपनी भूल समझ कर उनने,फिर से मुनिव्रत धार लिया था।।

आचार्य माघ नंदी

10. शास्त्र दान ग्वाले के भव में,मुनिराज को सहज दिया था।

जिसके कारण अगले भव में, ज्ञान क्षयोपशम बहुत मिला था।

रचना की द्रव्यानुयोग की, जिसकी उपमा कहीं नहीं है,

उन जैसे आचार्य यहां पर, अभी तलफ तो हुए नहीं है।।

आचार्य कुंद कुंद

11. एक बार ही जिनको सुनकर, पूरा पाठ याद होता था।
ज्ञान प्राप्त करने को जिनने, कष्टों को भी अपार सहा था!!

अकलंक देव

12. मांसाहारी शेर को जिसने, शाकाहारी सहज बनाया।
मिष्ट जलेबी खिला खिला कर, जैनों का सम्मान बढ़ाया।।

दीवान अमर चंद

13. निरतिचार शील की महिमा, सूली भी सिंहासन बन गई।
व्रत पालन की अनुपम शक्ति, नाम सेठ का रोशन कर गई।।

सेठ सुदर्शन

14. प्राणों की आहुति देकर, जिनने अपना भाई बचाया।

जैन धर्म की रक्षा करके, जग में अपना नाम कराया।।

निकलंक देव

15. ब्रह्मचर्य व्रत बालपने में देखादेखी सहज लिया था।

निरातिचार उसके पालन में कष्टों को अपार सहा था।

अंत में आर्यिका व्रत लेकर, नारी भव का भी छेद किया था।।

अनंतमती

16. कामदेव सा रूप है, बल शाली वह वीर।

अंजन वायु सुत कहो, बतलाओ तुम होकर धीर।।

हनुमान जी

17. घर से तो दई निकाली, मां बाप सुने ना भाई।
थी साथ में सखी बसंती, एक पुत्र गुफा में जनती।।

अंजना सती

18. पुण्योदय का पार न, पर ना कण की चाह।
अंतर मुहूर्त काल में, लोकालोक जनाय।।

भरत चक्रवर्ती

19. ग्रंथ अपूर्व अपूर्ण रचकर,भव्य जनों पर किया महान उपकार।
राज्य आज्ञा के कारण हाथी ने, जिसके लिए प्राण तत्काल।।

टोडरमल जी

20. चतुर्मुखी के भवन में, भवने योग्य ही आय।
यत्र - तत्र अन्यत्र फिरे, ऐसे कौन बताए।।

अभव्य जीव

जय जिनेन्द्र